

## दिंशाष्टकम्

|   |       |
|---|-------|
| ब्रह्ममुरारिसुरार्चितदिंशम्<br>निर्मलभाषितशोभितदिंशम् | ।     |
| जन्मजदुःखविनाशकदिंशम्<br>तत्प्रशामामि सदाशिवदिंशम्    | ॥ १ ॥ |
| देवमुनिप्रवरार्चितदिंशम्<br>कामदहम् क्रुशाकरदिंशम्    | ।     |
| रावणदुर्षविनाशनदिंशम्<br>तत्प्रशामामि सदाशिवदिंशम्    | ॥ २ ॥ |
| सर्वसुगन्धिसुलेपितदिंशम्<br>बुद्धिविवर्धनकारणदिंशम्   | ।     |
| सिद्धसुरासुरवन्दितदिंशम्<br>तत्प्रशामामि सदाशिवदिंशम् | ॥ ३ ॥ |
| कनकमहामणिभूषितदिंशम्<br>इण्डिपतिवेष्टितशोभितदिंशम्    | ।     |
| दक्षसुयज्ञविनाशनदिंशम्<br>तत्प्रशामामि सदाशिवदिंशम्   | ॥ ४ ॥ |
| कुमकुमचन्दनलेपितदिंशम्<br>पञ्चजहारसुशोभितदिंशम्       | ।     |
| सन्यतपापविनाशनदिंशम्<br>तत्प्रशामामि सदाशिवदिंशम्     | ॥ ५ ॥ |
| देवगणार्चितसेवितदिंशम्<br>भावैर्भक्तिभिरेव च दिंशम्   | ।     |
| दिनकरकोटिप्रभाकरदिंशम्<br>तत्प्रशामामि सदाशिवदिंशम्   | ॥ ६ ॥ |
| अष्टदशोपरिवेष्टितदिंशम्<br>सर्वसमुद्वेकारणदिंशम्      | ।     |
| अष्टदशविनाशनदिंशम्<br>तत्प्रशामामि सदाशिवदिंशम्       | ॥ ७ ॥ |

सुरगुरुसुरवरपूजितलिंगम्  
सुरवनपुष्पसदारचितलिंगम् ।  
परात्परम् परमात्मकलिंगम्  
तत्प्रशामामि सदाशिवलिंगम् ॥ ८ ॥

लिंगाष्टकमिदम् पुण्यम् यः पठेच्छिवसन्निधौ ।  
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

\*\*\*\*\*

PORTLAND PANDIT